Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

20

छत्तीसगढ़ रत्न - 'डॉ.अनिता सिंह'

डॉ.राहुल संदानशिव
नूतन मराठा महाविद्यालय जलगांव महाराष्ट्र

भारतीय संस्कृति अपने संस्कारों के कारण विश्व में सब से श्रेष्ठ मानी जाती है। क्योंकि यहां सभी अपनी मर्यादा में जीवन - यापन करते है। यहाँ स्वच्छंदता को स्थान नहीं। स्मृति ग्रंथो में महिलाओं के बारे लिखा गया है कि 'एक लड़की को हमेशा अपने पिता के संरक्षण में रहना चाहिए ,विवाह के बाद पति द्वारा उसका संरक्षण होना चाहिए ,पति के मृत्यु के बाद उसे अपने बच्चों की दया पर निर्भर रहना चाहिए लेकिन किसी भी स्थिति में एक महिला आजाद नहीं हो सकती।' संस्कार का जिम्मा केवल महिलाओं के जिम्मे छोड़कर पुरुष अपनी मनमानी करता रहे, इसे भारतीय संस्कृति तो नहीं कहा जा सकता? ऐसा नहीं कि स्मृति एवं श्रुति ग्रंथों के सभी ग्रंथों में महिलाओं की उपेक्षा की गयी हो। कुछ ग्रंथों में महिलाओं को शक्ति का प्रति रूप माना गया है। कुछ ग्रंथों में कृषि का अनुसंधाता माना गया है तो कुछ ग्रंथों में वह पूजनीय भी है।

"यत्र नार्यस्तु पुजयन्ते रमंते तत्र देवता"

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता का वास होता है ।यह पंक्ति नारी के सम्मान का द्योतक है। आज नारी अपने सम्मान का रास्ता स्वयं चुन रही है ।आज की आधुनिक नारी घर के तीमारदारी से लेकर बाहर नौकरी के जिम्मेदारी बखूबी निभा रही है। धरती से लेकर अंबर तक की कहानी स्वयं लिख रही है ।हर चुनौती को स्वीकार कर कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ रही है तथा राष्ट्र और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जैसे शक्ति के बिना शिव अधूरे हैं वैसे ही नारी के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती है तो फिर बिना स्त्री के समाज और साहित्य के विकास की बात कैसे कर सकते हैं ।नारी ने जब घर से बाहर कदम रखा तो समाज के विकास में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी।बेशक हम साहित्य से समाज को बदलने की उम्मीद रखते हैं, प्रभावित करने की उम्मीद रखते हैं और इस उम्मीद पर खरी उतरने वाली महिला साहित्यकारों की लंबी सूची है। जिन्होंने हिंदी साहित्य को आगे बढ़ाने तथा समाज को नयी दिशा देने के लिए हम सदैव याद रखेंगे। हिंदी साहित्य के इतिहास पर नजर डालें तो अब तक अनेक महिला साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी क्रम में महिला साहित्यकार डॉ. अनिता सिंह जो विकलांग -विमर्श और किन्नर -विमर्श पर उपन्यास लिखकर उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। छत्तीसगढ़ रत्न से सम्मनित डॉ.अनिता सिंह समीक्षक उपन्यासकार के रूप में विख्यात है। इनकी जन्म भूमि तो ऐतिहासिक नगर चुनार मिर्जापुर [उत्तर प्रदेश]है लेकिन कर्मभूमि बिलासपुर[छत्तीसगढ़]है। डॉ.अनिता सिंह का मानना है कि ''छत्तीसग़ढ की माटी इतनी उर्वर है कि यहाँ आकर मेरी लेखनी को नया आयाम मिला। लिखती तो मै बचपन से थी लेकिन कभी किसी का ध्यान मेरी तरफ नहीं गया।बिलासपुर आने के बाद गुरुदेव डॉ.विनय कुमार पाठक का सानिध्य मिला जिसके प्रतिफल स्वरुप मेरी लेखनी को पहचान मिली। 2021में'समय से आगे'उपन्यास के प्रकाशन के साथ मुझे राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक उपन्यासकार के रूप में लोग जानने लगे यह एक बड़ी उपलब्धि है।'' डॉ.अनिता सिंह साहित्यकार एवं समीक्षक के रूप में जानी जाती है। इनकी प्रथम शोध कृति; [2013] में प्रकाशित हुई जिसका शीर्षक था ' महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी-चिंतन।'यह शोध कृति भारतीय संस्कृति के दर्शन कराते हुए स्त्री विमर्श पर प्रकाश डालती है। [2016] में प्रकाशित 'भोजपुरी के संस्कारपरक लोकगीत कृति प्रकाशित हुई जिससे इन्हे लोक साहित्य मर्मज्ञ के रूप में पहचान मिली।इस संदर्भ में डॉ.विनय कुमार पाठक भूमिका में लिखते है " नारी संस्कारप्रदाता होने के साथ-साथ सच्चे अर्थो में राष्ट्र-निर्माता होती है। इसका प्रमाण हिंदी की समग्र लोकभाषाओं में प्रचलित संस्कार प्रधान लोकगीत है। भोजपुरी नारियां नयी पीढ़ी को लोकगीतों के माध्यमसे संस्कार ही नहीं देती,प्रत्युंत उन्हें मातृभूमि से राष्ट्रभूमि तक जोड़ने और वसुधैव कुटुंबकम को आत्मसात कर मानवता का पाठ भी पढ़ाती है।" [1]

डॉ.अनिता सिंह कवयित्री भी है। 'कुछ उनकी कुछ अपनी बातें 'कविता संग्रह [2017] में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह के शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है कि कवयित्री अपने साथ उनको भी जोड़ लेती है जो उनकी भावनाओं की कदर करे। डॉ.अनिता सिहं अपनी कविताओं के माध्यम से उनकी भी कथा कहती है साथ ही अपनी बात भी उनके साथ जोड़ती है। इससे स्व-पर का भाव समाप्त होकर विशुद्ध मानवता के दर्शन होते है। कुछ कविताओं में बचपन का प्यार है तो कुछ कविताओं में समाज के प्रति आक्रोश भी देखने को मिलता है। अपनी बात में वह लिखती है -"अपनी कविताओं को लेकर मैंने अपने कवि होने-न-होने का कोई भ्रम नहीं पाला है ,अपनी रचना धर्मिता को मैंने संकलन,प्रकाशन आत्मप्रचार और मंच लोलुपता से बहुत बचाए रखा है क्योंकि इसमें कही अंतरंग जीवन की झलकियां है तो कही समाज के प्रति आक्रोश,तो कही बचपन का प्यार, प्रकृति का दुलार और अपनों का साथ है।" [2] डॉ.अनिता सिंह का काव्य संग्रह "मेरी सिसकियाँ" में अनुखन माधव; माधव सुमरित सुंदरी भली मधाई वाली बात दृषिगोचर होती है। इस कृति में कवयित्री राधा की तरह कृष्णमय होकर राधा -राधा नाम का जप करते हुए मौन साधना में लीन हो गई है। इस कृति में लौकिक प्रेम की कमी को अलौकिक की ओर मोड़ा है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

संवेदना के सांचे में ढली संयोग वियोग के भाव को एक सांचे में ढालकर कवियित्री ने इहलोक और परलोक में समन्वय साधने का प्रयास किया है। इसी विशेषता के कारण पाठको में यह कृति लोकप्रियता हासिल करती है।

इंतजार कहानी संग्रह [2019] को प्रकाशित हुआ। यह कहानी-संग्रह भी काफी लोकप्रिय हुआ। प्रस्तुत कहानी संग्रह में कुल 21कहानियाँ संकलित है।जिनके शीर्षक इस प्रकार है- मां इंतजार कर्तव्य अटूट रिश्ता पश्चाताप एक थी औरत पाती प्रेम की बनारसी साडी किरण पवित्र रिश्ता सिसकियों का सिलसिला चोर समझौता शर्त वृद्धाश्रम नालायक मंदबुद्धि आशीर्वाद दसवीं 'सी' के तीन सोपान वसुधा और उड़ान हौसलों की।इस कहानी-संग्रह की भूमिका प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.विनय कुमार पाठक जी ने लिखी है।डॉ.अनिता सिंह महिला स्वतंत्रता के नाम पर पाश्चात्य सभ्यता का अंधनुकरण का समर्थन नहीं करती। बल्कि उनकी कहानियों की नायिकाएं पुरुष से घृणा की बजाए पुरुष के साथ मिलकर अपनी अस्मिता रक्षण की बात करती है। "डॉ.अनिता सिंह एक ऐसी महिला है जिसमें शून्य से क्षितिज को स्पर्श करने का माद्दा है। यही कारण है कि इसमें स्त्री-विमर्श का प्रादर्श भी प्रतिष्ठित है। ये पाश्चात्य प्रभावित आधुनिक महिला की छवि की बजाय भारतीय संस्कृति के अनुरूप पुरुष से कदम से कदम मिलाती हुई और परस्पर पूरकता को प्रश्रय देती हुई उसकी अस्मिता का अन्वेषण करती है।" [3]

इक्कीसवी सदी के नव्य विमर्श के रूप में विकलांग विमर्श पर आधारित कृति -"मंजिले और भी है " [2020] एवं किन्नर विमर्श पर आधारित उपन्या 'ससमय से आगे भी' काफी लोकप्रिय हुए। मंजिले और भी है कृति के माध्यम से डॉ.अनिता सिंह ने विकलांगो के साहस को सहारा है। साथ ही विकलांगो आत्मविश्वास को बढ़ावा देने का काम किया है। यह कृति विकलांगता के सभी आयामों को स्पर्श करती है। स्थानिक हो या प्रादेशिक ,राष्ट्रीय हो या अंतर्राष्ट्रीय सभी स्तर के प्रतिभावान विकलांगो को खोजकर उनकी प्रतिभा से समाज को रूबरू कराने का प्रयास किया है। विकलांग विमर्श पर आधारित 'स्वीकरण' [2023] उपन्यास के बारें में डॉ.सुरेश माहेश्वरी लिखते है -" डॉ.अनिता सिंह द्वारा लिखित उपन्यास विकलांगता पर आधारित है। जिसकी कथा के मुख्य पात्र वास्तविक है। 'विकलांग विमर्श इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की दस्तक के साथ अविर्भूत हुआ जिसके मूल में लिंग और जाति से रहित विशुद्ध मानवतावादी दृटिकोण प्रमुख रहा है।"[4]

डॉ.अनिता सिंह को विश्व में पहचान दिलाने वाली कृति है उपन्यास "समय से आगे'जो 2021में प्रकाशित हुआ। ''डॉ.अनिता सिंह का उपन्यास 'समय से आगे' किन्नरों की परंपरा को प्रोन्नत कर प्रगतिशीलता के पथ पर प्रस्थित एवं भविष्य को दिग्दर्शित कराने अर्थात समय के साथ कदमताल करते हुए युग-संदर्भो के अनुरूप की संकल्पना का संयोजन है। एक साहित्यकार दूर दृष्टा इसलिए कहलाता है कि वह अतीत के सूत्र के सहारे वर्तमान को थामें भविष्य का पथ प्रशस्त करता है। इसका आशय यह है कि वह आधुनिकता को आँकने और समकालीनता को जांचने तक सीमित न रहकर समय के आगे का प्रस्ताव करता है।''[5]

यह उपन्यास इसलिए खास है कि इसमें केवल किन्नरों की समस्यों को ही नहीं गिनाया गया बल्कि उनके जीवन में परिवर्तन लाने की कामना है। सभी समस्याओं पर मात की जा सकती है को दर्शाया गया है। समय से आगे उपन्यास ममता नामक किन्नर पात्र के जीवन संघर्ष का दस्तावेज है। ममता समाज एवं परिस्थियों पर विजय प्राप्त कर डॉक्टर बनती है। अपने जैसों के लिए स्वालंबन का मार्ग प्रशस्त करती है। आने वाले पच्चीस साल के बाद कोई भी किन्नर अपनी किन्नरता को शाप नहीं मानेगा बल्कि यह शारीरिक कमजोरी समझकर उस पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करेगा। सकारात्मक सोच के साथ लिखा गया उपन्यास 'समय से आगे' किन्नरों के भविष्य का दिशा निर्देशक है।
डॉ.अनिता सिंह कविता ,कहानी उपन्यास के साथ निबंध भी लिखे है। वैसे तो निबंध को सब से कठिन विधा माना जाता है। इससे व्युत्पन्न गद्य के समग्र विधाएँ इससे उत्प्रेरित रही है। " हौसलों की पराकाष्ठा' [2022] निबंध संग्रह डॉ.अनिता सिंह के निबंध लेखन में सफल होने का प्रमाण है। हौसलों की पराकाष्ठा शीर्षक जीवन को जाँच और लक्ष्य को आंक कर सपनो को साकार करने का प्रयास है। सामान्य जन क्षितिज के उस पर की नहीं सोचता किंतु यह कृति विश्वास दिलाती है कि आकाश के उस पर भी आकाश है। हाशिए में रहने वाली स्त्री,दलित,आदिवासी,किन्नर,विकलांग,प्रताड़ित सभी के भविष्य को केंद्र में रखकर साहित्य सृजन करना मानवता वादी दृस्टि की पहचान है। डॉ.अनिता सिंह छत्तीसगढ़ रत्न सहित अनेक राष्ट्रीय सम्मानो से सम्मानित कहानीकार,उपन्यासकार,कवयित्री,समीक्षक और शोधक के रूप में चर्चित है तथा छः पुस्तकों के कुशल संपादन के पश्चात अब किन्नर आलोचना के प्रवर्तक 'डॉ.विनय कुमार पाठक' पर केंद्रित इक्कीसवी सदी के नव्य विमर्श पर आधारित संपादित कृति अब इनके कुशल संपादन का निदर्शन निर्दिष्ट है। सही मायने में डॉ.अनिता सिंह 'छत्तीसग़ढ रत्न कहलाने की हक़दार है।

संदर्भ

1] डॉ.अनिता सिंह - भोजपुरी के संस्कारपरक लोकगीत पृ -8
2] डॉ.अनिता सिंह - कुछ उनकी कुछ अपनी बातें - पृ- 7
3] डॉ.अनिता सिंह - इंतजार पृ -5
4] डॉ.अनिता सिंह -स्वीकरण - [भूमिका] डॉ.सुरेश माहेश्वरी
5] डॉ.अनिता सिंह - समय से आगे- पृ- 7

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved